RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-09
September-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति : बिहार राज्य के रोहतास जिला के संदर्भ में

Dr. Kumari Sushma

Assistant professor, Deptt. Of Poltical Science, Ram Narayn Shah Sarvodaya Mahavidaya , Ganjbharasra , Rohtas

ARTICLE DETAILS

Article History
Received: 05 August 2017
Accepted: 10 Sep 2017
Published Online: 15 Sep 2017

कुंजी शब्द (Key words) :
परिस्थिति, सामाजिक स्तर, समान दर्जा, पराधीनता, आश्रित

ABSTRACT

समाज की स्थिति उस समाज में महिलाओं की दशा को देखकर ज्ञात की जा सकती है। परिस्थिति और कालखंड के अनुसार महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन होता रहा है। समाज के निर्माण में महिलाओं की भूमिका उतनी ही प्रमुख होती है जितनी कि शरीर को जीवित रखने के लिये जल, वायु और भोजन की आवश्यकता होती है। भारत के संविधान में पुरूषों एवं महिलाओं को समान दर्जा और अधिकार दिये जाने के बावजूद इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि विकास और सामाजिक स्तर की दृष्टि से महिलायें अभी भी पुरूषों से काफी पीछे है।कार्य में दक्षता, योग्यता एवं कुशलता होने के बावजूद महिलाओं को सामाजिक पहचान पुरूषों के समान प्राप्त नहीं हो सका है। आर्थिक पराधीनता और आश्रित स्थिति के कारण महिलायें आर्थिक उत्पादन के कार्यों से विरत रही है। प्रस्तुत शोध आलेख के द्वारा ऐसी महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है जो बिहार राज्य के रोहतास जिला के ग्रामीण क्षेत्रों से संबद्ध हैं। रोहतास जिला मे ग्रामीण महिलाओं की वर्तमान सामाजिक और आर्थिक स्थिति के अध्ययन में उन तमाम महत्पपूर्ण आयामों का अवलोकन किया गया है जो अध्ययन के लिए आवश्यक और अनिवार्य है।

अध्ययन का प्रारूप एवं प्रविधि (Research Design & Methodology) :

शोध–आलेख का केन्द्रीय विषय बिहार राज्य के राहेतास जिला में ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विश्लेषण है। इसके अन्तर्गत शिक्षा, आय, रोजगार, पारिश्रमिक इत्यादि आधार पर ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का आकलन किया गया है। अध्ययन विवरणात्मक पद्धति पर आधारित है। सूचनाओं एवं समंको का संकलन पूर्णतः वैज्ञानिक प्रविधियों से किया गया है। वैज्ञानिक पद्वति समस्त विषयों में सामान्य है एवं विषय से संबद्ध एक सामान्य सत्य को ढूढ़ निकालने की विधि वैज्ञानिक विधि है। इसमें इकाईयों का अध्ययन सम्पूर्ण समूहों के सन्दर्भ में तथा उसके एक प्रतिनिधि के रूप में भी किया जा सकता है। इसलिए जो भी निश्कर्ष निकाला जाता है वह किसी विशिष्ट इकाई पर लागू न होकर सामान्य रूप से **लागू होता है।** A. Woolf लिखते हैं कि ''वह मुख्यतः प्रतिनिधि रूपो, किस्मों अथवा वर्गो से संबंधित है जिसमें उपस्थित व्यक्तिगत पदार्थ मात्र एक उदाहरण है।'' अर्थात् जो भी वैज्ञानिक खोज की जाती है वह किसी विशेष तथ्य पर लागू नही होता **है।** उसमें सामान्य नियम का निरूपण कर पर्याप्त सामान्यता रखी जाती है। समंको के संकलन में रोहतास जिला के ग्रामीण क्षेत्र की निम्न वर्गीय श्रेणी की महिला सूचनादात्री से प्राप्त सूचनाएँ प्रमुख सामग्री हैं। तत्पश्चात् संकलित सामग्री का क्रमबद्धिकरण इस प्रकार किया गया है जिससे प्राप्त तथ्यों को तार्किक रूप से अन्य तथ्यों के साथ ऐसी श्रृंखला में क्रमबद्ध किया जा सके जो परस्पर अपने स्वरूप को स्पष्ट करते हैं। जिले की ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को ज्ञात करने के लिए तीन चर शिक्षा, आय और रोजगार को विश्लेषण का मुख्य केन्द्र माना गया है। प्रस्तुत शोध आलेख इस परिकल्पना पर आधारित है कि क्या रोहतास जिला के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को सबल एवं सशक्त करने के लिए सरकारी और गैर–सरकारी प्रयास सफल हुए है? शोध–आलेख में तथ्यों का संकलन प्राथमिक और द्वितीयक स्त्रोतो पर आधारित है। विभिन्न शोध पत्र एवं पत्रिकाओं, शोध–ग्रन्थों तथा बिहार एवं केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों द्वारा जारी रिपोर्ट का गहन अवलोकन कर तथ्यों एवं सूचनाओं का संकलन किया गया है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष वास्तविकता को समझने के लिए सबसे उपयुक्त आधार होगा।

विश्लेषण : (Analysis) :

बिहार राज्य के शाहाबाद के सासाराम और भभुआ अनुमंडल को मिलाकर सन् 1972 में रोहतास जिला की स्थापना हुई। 1991 में रोहतास जिला को दो भागों में विभक्त कर भभुआ और रोहतास जिला बनाया गया। 1994 में भभुआ जिला का नाम परिवर्तन कर कैमूर कर दिया गया। वर्तमान में रोहतास जिला का मुख्यालय सासाराम में अवस्थिति है। जिले में तीन अनुमंडल विक्रमगंज, सासाराम और डेहरी है। यहाँ 19 खंड हैं। भौगोलिक रूप से रोहतास जिला दो भागों में विभक्त है–सासाराम और रोहतास का पठारी क्षेत्र। इसमें उत्तर में भोजपुर और बक्सर जिला, दक्षिण में झारखंड राज्य का पलामू और गढ़वा है। जबकि पश्चिम और पूरब में क्रमशः जिला कैमूर और औरंगाबाद एवं अरवल का कुछ भाग है। जिला में कुल 19 प्रखंड – कोचस, दिनारा, दावथ, सूर्यपूरा, काराकट, नसरीगंज, राजपुर, संझौली, नोखा, कारघर, चेनारी, नौहट्टा, शिवसागर, सासाराम, अकोरही गोला, डेहरी, तिलौथू और रोहतास है। जिले में 2072 गॉव हैं।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

बिहार जनगणना 2011 के अनुसार

कुल जनसंख्या	पुरूष	महिला	लिंग दर	साक्षरता प्रतिशत	पुरूष	महिला
103,804,637	84,185,347	49,619,290	916	63.82	73.39	53.33

उपरोक्त सारणी यह दर्शाता है कि बिहार की कुल आबादी 103804637 है। जिनमें से पुरूष और महिलाओं की कुल आबादी क्रमशः 84185347, 49619290 है। प्रति 1000 पुरूषों पर 916 महिलायें हैं। साक्षरता कुल 63.82 प्रतिशत है जिनमें से 53.33 प्रतिशत महिलायें साक्षर हैं जबकि 73.39 प्रतिशत पुरूष साक्षर हैं।

बिहार में महिला (स्त्रोत : नेशलन फैमिली हेल्थ सर्वे)

पहलू	1990 से पहले (प्रतिशत में)	1990 के बाद (प्रतिशत में)	लैंगिक अंतर(प्रतिशत में) (अ)	(ब)
जीवन प्रत्याशा दर	58.0	58.2	1.9	2.0
शिशु मृत्यु दर	72	73	4.0	3.0
लिंगानुपात	907	921		
लिंग दर (आयु समूह में)				
0–4 वर्ष	981	953		
5–14 वर्ष	934	943		
15–29 वर्ष	1043	1062		
30–49 वर्ष	935	897		
50–64 वर्ष	879	890		
65 वर्ष से ऊपर	792	700		
साक्षरता दर(प्रति दशक में)	22.0	33.6	29.4	26.8
प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाएँ	7.3	9.3	6.2	4.9
हाई स्कूल एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाएँ	6.6	6.1	14.0	13.5

प्रस्तुत सारणी बिहार मे महिलाओं की स्थिति दर्शाता है। कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को सारणी में दर्शाया गया है। जैसे–जीवन प्रत्याशा दर, शिशु मृत्यु दर, लिंगानुपात, लिंग दर और आयु समुह में साक्षरता दर इत्यादि। सारणी 1990 से पहले और 1990 के बाद के दशक का विवरण प्रस्तुत करता हैं। इन दशकों में हुए लैंगिक अंतर को भी दर्शाया गया है। सारणी स्पष्ट करता है कि महिलाओं में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा दर 1990 से पहले 58.0 प्रतिशत जबकि 1990 के पश्चात् 58.2 प्रतिशत रहा। इसी प्रकार शिशु मृत्यु दर 1900 से पूर्व प्रति 100 में 72 था और 1990 के दशक से पहले यह बढ़कर 73 हो गया। प्रति 1000 पुरूष में लिंगानुपात विभिन्न आयु समूह में दर्शाये गये हैं। 1990 के दशक में 0–4 वर्ष की आयु में यह 953, 5–14 वर्ष की आयु में 934, 15–29 वर्ष की आयु में 1043, 30–49 वर्ष की आयु में 935, 50–64 वर्ष की आयु में 879 और 65 वर्ष से ऊपर की आयु में 792 रहा। जबकि 1990 के दशक के बाद निम्न आयु समूह के लिंगानुपात में वृद्धि दर्ज की गई– 5–14 वर्ष की आयु समूह में 943, 15–29 वर्ष की आयु समूह में 1062 और 50–64 वर्ष की आयु समूह में 890 । जबकि 30–49 वर्ष और 65 वर्ष से ऊपर की आयु समूह में लिंगानुपात में 1990 से पूर्व की तुलना में कमी देखी गई।

बिहार एवं रोहतास (कुल जनसंख्या)

	कुल जनसंख्या	पुरूष	महिला
बिहार	103,804,637	84,185,347	49,619,290
रोहतास	29,59,918	1543546	1,416,372

रोहतास जिला : भारत की जनगणना 2011 के अनुसार बिहार की कुल जनसंख्या 103,804,637 है। रोहतास बिहार में जनसंख्या के मामले में 17वें पायदान पर है यानि यहॉ की कुल जनसंख्या 29,59,918 है। सर्वाधिक ग्रामीण क्षेत्र वाला खण्ड कोचस है। यहॉ महिलाओं की कुल आबादी 1416372 है।

बिहार राज्य एवं रोहतास जिला के ग्रामीण क्षेत्रों की कुल आबादी और लिंगानुपात

	कुल ग्रामीण जनसंख्या	महिला	लिंगानुपात (प्रति 1000 पुरूष पर) ग्रामीण	शहरी
बिहार	92,341,436	44,267,586	921	895
रोहतास	2532153	1213877	921	899

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

सारणी के अवलोक से स्पष्ट होता है कि बिहार में ग्रामीण क्षेत्रों की कुल जनसंख्या 92341436 है। जिनमें से 44267586 महिला हैं। इसी प्रकार रोहतास जिला की ग्रामीण आबादी कुल 2532153 है जिनमें से 1213877 महिला हैं। संपूर्ण बिहार और रोहतास जिला के ग्रामीण क्षेत्रों का लिंगानुपात एक समान यानि प्रति 1000 पुरूषों पर 921 महिला है।

रोहतास जिला के ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षर महिलायें

कुल साक्षर	महिला	अनुसूचित जाति(महिला)	अनुसूचति जनजाति(महिला)
1514047	615088	5105	2435

सम्पूर्ण भारत में प्रति 1000 पुरूष पर 940 महिलाएँ हैं। जबकि बिहार में राष्ट्रीय औसत में कम लिंगानुपात प्रति 1000 पुरूष पर 916 महिलाये है। यह ऑकड़े जनगणना 2011 से संकलित हैं। जनगणना 2001 में जहॉ लिंगानुपात का राष्ट्रीय स्तर 933 था वहीं यह बिहार में 919 रिकार्ड किया गया था।

नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे –4, वर्ष 2015–16 से प्राप्त ऑकड़े के आधार पर रोहतास के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति से संबंधित प्रमुख पहलुओं के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय जानेवाली 6 वर्ष या उससे ऊपर की बालिकाएँ कुल 66.2 प्रतिशत है। 15 वर्ष से कम उम्र की बालिकाओं का प्रतिशत कुल महिला आबादी का 37 प्रतिशत है और यहॉ प्रति 1000 पुरूष पर लिंगानुपात यानि महिलाओं की संख्या 1,031 है। ग्रामीण क्षेत्रों की कुल 62.97 प्रतिशत महिलाएँ साक्षर हैं। इसी प्रकार वैवाहिक स्थिति का अवलोकन करने से यह स्पष्ट हुआ कि 18 वर्ष से कम उम्र में कुल 29.6 प्रतिशत ग्रामीण महिलायें विवाहित हो जाती है और 11 प्रतिशत महिलाएँ विवाहोपरान्त 15–19 वर्ष की आयु में गर्भवती हो जाती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूरों की कुल संख्या 811019 है जिनमें से 200944 महिलायें हैं। जिले में 172526 व्यक्तियों का जीवन–यापन कृषि कार्यों से संबंधित मजदूरी पर निर्भर है। जिनमें से ग्रामीण क्षेत्र की 26796 महिलायें कृषि कार्य में संलग्न है। इसी प्रकार कुल 24900 व्यक्तियों का परिवार पूर्णतः गृहस्थ है। ग्रामीण क्षेत्रों में कुल 18128 व्यक्तियों में से 6829 महिलाओं का परिवार पूर्णतः गृहस्थ जीवन व्यतीत कर रही हैं। 176026 व्यक्ति अन्य कार्यों में संलगन हैं। जिनमें से कुल 149349 पुरूष और 26657 महिलायें हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसी महिलाओं की कुल संख्या 19567 है।

कृषि कार्य में संलग्न मजदूर

	कुल व्यक्ति	पुरूष	महिला
रोहतास	172526	145730	26796
ग्रामीण	163910	137810	26100
शहरी	8616	7920	696

सारणी से ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण रोहतास जिला में कुल 172526 व्यक्ति कृषि कार्यों में संलग्न हैं जिनमें से महिला मजदूरों की संख्या 26796 है। ग्रामीण क्षेत्रों में कुल 163910 मजदूर कृषि कार्य में संलग्न है जिनमें से 26100 मजदूर महिला है।

घरेलू उद्योग में कार्यरत मजदूर

	कुल व्यक्ति	पुरूष	महिला
रोहतास	24900	16769	8131
ग्रामीण	18128	11299	6829
शहरी	6772	5470	1302

सारणी से यह स्पष्ट है कि रोहतास जिला में घरेलू उद्योग में कार्यरत कुल मजदूर 24900 हैं जिनमें से पुरूष और महिला मजदूरों की संख्या क्रमशः 16769 और 8131 है। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में यह संख्या 18128 है। जिनमें से महिला 6829 है जबकि 11299 पुरूष मजदूर घरेलू उद्योगों में कार्यरत हैं।

पारिश्रमिक :

जिले के ग्रामीण क्षेत्र में कृषि एवं गैर–कृषि कार्यों में कार्यरत पुरूष एवं महिला मजदूरों का सर्वे किया गया। कार्य के एवज में मिलने वाले पारिश्रमिक को रूपये में इस प्रकार दर्शाया गया है।

कृषि कार्य के लिए पारिश्रमिक (रूपये में)

कार्य	पुरूष (पारिश्रमिक)	महिला (पारिश्रमिक)
प्रमुख कृषि कार्य	49.00	48.00
कटाई	47.00	47.00
हल जोतना	41.50	–
निराई	45.00	–
अन्य कार्य	39.00	39.00

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न कृषिगत कार्यों के एवज में प्राप्त मजदूरी दर में पुरूष और महिला मजदूरों के बीच सामान्य अंतर है। प्रमुख कृषि कार्य के लिए महिलाओं का पारिश्रमिक पुरूषों से कम यानि 48.00 रूपये है जबकि इसी कार्य के लिए 49.00 रूपये पुरूष मजदूरों के लिए निर्धारित है। इसी प्रकार कटाई, खेत में हल जोतना और निराई के लिए पुरूष और महिला मजदूरों के पारिश्रमिक में सामान्य अन्तर देखा गया। अन्य कार्यों के लिए पारिश्रमिक दोनो वर्गों को समान प्राप्त होते हैं।

गैर–कृषि कार्यों के लिए पारिश्रमिक (रूपये में)

गैर–कृषि कार्य	पुरूष (पारिश्रमिक)	महिला (पारिश्रमिक)
प्रशिक्षित मजदूर	72.66	–
अप्रशिक्षित मजदूर	40.66	34.83
सरकारी कार्यक्रम	40.00	40.00

ग्रामीण क्षेत्रों में गैर–कृषि कार्यों के लिए एक भी प्रशिक्षित महिला मजदूर नहीं है। जबकि अपशिक्षित महिला मजदूरों को 34.83 रूपये पारिश्रमिक प्राप्त होते हैं। सरकारी कार्यक्रमों से संबंधित कार्यों के लिए पारिश्रमिक 40.00 रूपये हैं। यह पुरूष और महिला दोनो के लिए समान है।

जिले के ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में बदलाव के लिए राज्य सरकार द्वारा विभिन्न योजनओं एवं कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया गया है। कुछ प्रमुख योजनाये शत–प्रतिशत केन्द्र द्वारा प्रायोजित हैं जबकि राज्य सरकार की योजनायें और कार्यक्रम महिलाओं की स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, रोजगार में वृद्धि के लिए माइक्रो फाइनेंस आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों के सर्वेक्षणोपरान्त यह ज्ञात हुआ कि मनरेगा, समेकित बाल विकास कार्यक्रम, आशा, जननी सुरक्षा योजना, अक्षर ऑचल योजना इत्यादि कार्यक्रमों को ग्रामीण क्षेत्रों में भी संचालित किया जा रहा है। मनरेगा कार्यक्रम में महिलाओं की भागीदारी ने ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक सबलता प्रदान की है। अध्ययन के उपरान्त यह ज्ञात हुआ कि राज्य में कुल 36.42 लाख व्यक्तियों को इस कार्यक्रम के द्वारा रोजगार उपलब्ध कराए गए हैं। जिनमें से 28.8 प्रतिशत यानि लगभग 29 प्रतिशत महिलाये हैं और रोहतास जिला के ग्रामीण महिलाओं का कुल संख्या में से लगभग 2 प्रतिशत है। इसी प्रकार समेकित बाल विकास कार्यक्रम को भी क्रियान्वित किया गया है। सर्वेक्षणोपरान्त यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण क्षेत्रों की अधिकांश आंगनबाड़ी केन्द्र कार्यरत है। समेकित बाल विकास कार्यक्रम के कार्यान्वयन में आंगनबाड़ी केन्द्र प्रमुख पूरक के रूप में है। ग्रामीण क्षेत्रों की निम्न आय वर्गीय महिलाओं ने यह माना कि आंगनबाड़ी केन्द्रो से वे एवं उनके बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं। कुछ कठिनाईयों को छोड़कर ग्रामीण क्षेत्रों में राज्य सरकार का यह कार्यक्रम महिलाओं की सामाजिक स्थिति में बदलाव को रेखांकित किया है।

समीक्षा एवं निष्कर्ष :

अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए रोजगार के सीमित अवसर हैं। अतः आय उर्पाजन और उत्पादकता में वृद्धि के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर का सृजन किया जाना चाहिए। जिसमें लघु उद्योग, गृह उद्योग महत्वपूर्ण हो सकता है। मनरेगा जैसे सरकारी योजना में ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि सुनिश्चित कर इन्हें आर्थिक रूप से सबल किया जा सकता है। जिले के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को कौशल विकास कार्यक्रम और प्रशिक्षण तथा कृषि प्रबंधन का प्रशिक्षण देकर आर्थिक स्थिति को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है। सरकारी और गैर–सरकारी एजेंसियों के द्वारा हस्तकला, शिल्पकला, कढ़ाई इत्यादि क्षेत्रों में ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें कौशलयुक्त और उद्यमी बनाया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला समूहों का गठन के बाद महिलाओं की आर्थिक स्थिति में बदलाव देखा गया है। यह समूह महिलाओं का एक संगठन है जिसके सभी सदस्य महिलायें होती हैं और
उनमें से एक सदस्य नेतृत्वकर्ती होती हैं। इस समूह से जुड़ी महिलाओं को न केवल एक सामाजिक पहचान प्राप्त हुआ है बल्कि क्रेडिट, सेविंग आदि योजनाओं की जानकारी भी इनके लिए सुलभ हो गई है। महिला समूह जिले के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के लिए लाभकारी साबित हुआ है। जिले के ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को सशक्त करने के लिए आजीविका के विभिन्न अवसरों को सृजित करने की आवश्यकता है। इसके लिए राज्य सरकार के विभिन्न मंत्रालयों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में आय के विभिन्न साधनों को ज्ञात कर महिलाओं की क्षमता के अनुरूप उन्हें सक्रिय किया जा सकता है।

संदर्भ स्त्रोत :–

1. Status of women in Bihar : Exploring Transformation in work & gender relation ; Institute for human development, New Delhi.
2. Arneil, B. (2001), “Women as wives, Servants and Slaves: Rethinking the Public/Private Divide.”,
3. Canadian Journal of Political Science, Vol. 34, No. 1
4. Datta,A and Mishra, S.K. (2001), “Glimpses of Women’s Lives in Rural Bihar: Impact of Male Migration”, The Indian Journal of Labour Economics, Vol. 54,No. 3

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

5. Government of India(1974): Towards Equality: Report of the Committee on the Status of women in India, New Delhi:Department of Social Welfare.
6. District Level Household and Facility Survey under Reproductive and Child Health Project (DLHS-3): Ministry of Health and Family Welfare; Government of India.
7. Census of India 2011.
8. Census of India 2001
9. Census of India 2011; Bihar:District Census Handbook Rohtas; Directorate of Census operations Bihar.
10. Economic participation of women in Bihar;A status report, supported by Socio-Economic Research Division (SER);Planning Commission, Government of India, New Delhi.

© RRIJM 2015, All Rights Reserved